IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 11, June 2026
Impact Factor: 8.2

राजस्थान की सुंदर सुई कढ़ाई कला - परंपरा, पहचान और शिल्पकौशल का संगम

रोहन कुमार, रीना त्यागी, मयंक सैनी
एम.एफ.ए. (फैशन डिज़ाइन) विद्यार्थी
ललित कला विभाग
सहायक प्राध्यापक, ललित कला विभाग
श्री राम कॉलेज, मुज़फ्फरनगर

सारांश

भारतीय हस्तशिल्प परंपरा अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। प्रत्येक राज्य की अपनी विशिष्ट कारीगरी होती है और भारतवर्ष में विभिन्न शासकों के प्रभावों से विकसित शिल्प कलाओं की झलक देखने को मिलती है। इन्हीं में से एक प्रमुख कला है कढ़ाई जो राजस्थान में एक परंपरा के रूप में सदियों से जीवित है और जिसे वहाँ के कारीगरों ने पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित रखा है। राजस्थान के कारीगर कढ़ाई को केवल एक व्यवसाय के रूप में नहीं बल्कि अपनी सांस्कृतिक धरोहर के प्रति सम्मान के प्रतीक के रूप में देखते हैं। राजस्थान में कढ़ाई कार्य के प्रमुख केंद्र स्थित हैं और यह हस्तकला राज्य के अनेक समुदायों के लिए आजीविका का एक मुख्य साधन है। पारंपरिक परिधान सजाने के तरीकों में कढ़ाई का विशेष स्थान रहा है और यह आज भी युवाओं के बीच उतनी ही लोकप्रिय है। चाहे वह प्राचीन पारंपरिक डिज़ाइन हो या आधुनिक आकृति व मोटिफ़ कढ़ाई वस्त्रों की सजावट का एक प्रमुख और प्रिय माध्यम बनी हुई है। यह कला न केवल सांस्कृतिक पहचान को दर्शाती है, बल्कि क्षेत्रीय विविधताओं और रचनात्मकता का भी प्रतीक है।

मुख्य शब्द: कढ़ाई राजस्थान मोटिफ़ डिज़ाइन परिधान

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 11, June 2026
Impact Factor: 8.2

परिचय

राजस्थान का रेगिस्तान जहाँ एक ओर अपनी कठोर जीवनशैली और विषम वातावरण के लिए जाना जाता है वहीं जब बात इसके रंगों वनस्पति और जीव-जंतुओं रेत की मृदुल प्रवाह और विशेष रूप से यहाँ के लोगों की होती है तो यह सारी गर्मी आत्मीयता में बदल जाती है। राजस्थान की कढ़ाई अपनी विविधता और कारीगरों की रचनात्मकता के कारण प्रसिद्ध है। यहाँ के कारीगर विभिन्न प्रकार के टांकों का उपयोग कर उत्पादों को सजाते हैं। पश्चिमी राजस्थान का क्षेत्र कढ़ाई कार्य के प्रमुख केंद्रों में शामिल है और यह हस्तशिल्प कई समुदायों के लिए आय का एक मुख्य साधन है।

यद्यपि कढ़ाई पारंपरिक परिधानों को सजाने का एक प्राचीन तरीका है फिर भी यह आज की युवा पीढ़ी के बीच भी अत्यंत लोकप्रिय है। चाहे वह पारंपरिक डिज़ाइन हो या आधुनिक आकृतियाँ कढ़ाई वस्त्र सज्जा का एक प्रमुख माध्यम बनी हुई है। यहाँ की महिलाओं के दैनिक जीवन में कढ़ाई एक अभिन्न हिस्सा है। घर की महिलाएं और आस-पड़ोस की स्त्रियाँ एकत्र होकर परिवार के लिए वस्त्रों की कढ़ाई करती हैं साथ ही वे अपनी शादी के लिए दहेज स्वरूप ले जाने वाले वस्त्रों और उपयोगी वस्तुओं की भी तैयारी करती हैं। ये महिलाएं घरेलू उपयोग की वस्तुओं से लेकर सजावटी उत्पादों तक की कढ़ाई करती हैं।

हालाँकि इन विशिष्ट और उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों की बढ़ती मांग ने इस पारंपरिक हस्तशिल्प को एक व्यावसायिक गतिविधि का रूप दे दिया है। 1971 के युद्ध के दौरान बड़ी संख्या में कुशल कारीगर परिवार पाकिस्तान से पश्चिमी राजस्थान में आकर बस गए थे। ये कारीगर अपने उत्पाद बिचौलियों को बेचते थे जो उन्हें अत्यधिक कम दामों में खरीदकर ऊँचे दामों पर बाज़ार में बेचते थे। विशेषकर बाड़मेर और जैसलमेर के बिचौलिए इनका शोषण कर रहे थे। इन उत्पादों की प्रमुख विशेषता थी कपड़े पर हस्तकढ़ाई जो इतनी उच्च गुणवत्ता की होती थी कि उन्हें देश-विदेश के एलीट बाज़ारों में बेचा जा सकता था।

उरमूल ट्रस्ट जैसे गैर-सरकारी संगठनों ने इन कारीगर परिवारों को संगठित किया और उनके लिए बाज़ार से जुड़ाव के माध्यम से विपणन की सुविधा उपलब्ध करवाई। आज रंगसूत्र दस्तकार दस्तकारी हाट समिति 'सम्पूर्ण और फैब इंडिया जैसे प्रतिष्ठित ब्रांड इन रेगिस्तानी कारीगरों के उत्पादों को देश और विदेश में प्रचारित एवं विपणन करने का कार्य कर रहे हैं।

उपभोक्ताओं की रुचि आज नवीन और पारंपरिक डिज़ाइनों के संयोजन में है। भारतीय लोक कला और कढ़ाई फैशन जगत में नए डिज़ाइन तैयार करने में अहम भूमिका निभा रही है प्रसिद्ध डिज़ाइनर रितु कुमार का मानना है कि पारंपरिक और आधुनिक डिज़ाइनों का सम्मिलन करना आज का प्रमुख फैशन ट्रेंड बन चुका है, जिससे न केवल कारीगर को बल्कि उपभोक्ता को भी लाभ मिल रहा है। उनका यह भी कहना है कि आज रचनात्मकता और नवाचार के लिए अधिक अवसर हैं क्योंकि समाज की स्वीकृति का स्तर अब अधिक हो गया है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि पारंपरिक डिज़ाइनों को पहनने योग्य आधुनिक शैली में ढालना एक बड़ी चुनौती है, लेकिन यह आवश्यक है कि हमारी समृद्ध हस्तकला विरासत आधुनिकता की दौड़ में खो न जाए।

इस शोध-पत्र में पश्चिमी राजस्थान की पारंपरिक कढ़ाई का वर्णन किया गया है। यहां के कारीगर पीढ़ियों से कढ़ाई से जुड़े हुए हैं और आज बड़े ब्रांड्स के लिए काम कर रहे हैं, जो उनके उत्पादों को वैश्विक स्तर तक पहुंचा रहे हैं।

भारतीय अपनी उत्कृष्ट कारीगरी और अत्यंत सुंदर वस्त्रों के निर्माण के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। "विविधता में एकता" की भावना केवल संस्कृति और रीति-रिवाज़ों में ही नहीं बल्कि परिधान और सजावट में भी परिलक्षित होती है। भारत के प्रत्येक राज्य की कढ़ाई शैली वहां के लोगों की जीवनशैली उनके व्यवसाय परंपराएं विचार विश्वास और रुचियों को अभिव्यक्त करती है।

गुजरात राज्य के सौराष्ट्र और कच्छ क्षेत्रों से लेकर उत्तर गुजरात और पश्चिमी राजस्थान तक फैला हुआ क्षेत्र जो आगे पाकिस्तान के सिंध प्रांत के थारपारकर ज़िले तक जाता है पिछले कई सदियों तक कढ़ाई कला का विश्व का सबसे समृद्ध केंद्र हुआ करता था। इस क्षेत्र की कढ़ाई न केवल अपनी कलात्मकता के लिए जानी जाती थी बल्कि यह यहाँ की सांस्कृतिक पहचान और विरासत की प्रतीक भी मानी जाती थी।

राजस्थान जो भारत के उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तान की सीमा से लगा एक राजसी राज्य है को सही रूप में भारतीय हस्तशिल्प की "धरोहरों का सिंहासन" कहा गया है। यहाँ जहाँ थार का मरुस्थल भूमि को तपाता है वहीं लोग अपने जीवन में रंगों और कलात्मकता की बहार लाकर उस तपन की भरपाई करते हैं। उनकी कला के माध्यम से एक ऐश्वर्य और समृद्धता की अनुभूति होती है। इस क्षेत्र की इमारतों वस्त्रों और कढ़ाई में रंगों की भरमार देखने को मिलती है। यहाँ निर्मित प्रत्येक वस्त्र एक आकर्षण का केंद्र होता है जो अपनी दृश्यात्मक और सौंदर्यात्मक सुंदरता को प्रकट करता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 11, June 2026
Impact Factor: 8.2

राजस्थान के विभिन्न जिलों में कई प्रकार की कढ़ाई की परंपराएं प्रचलित हैं। प्रमुख कढ़ाई शैलियों में मोची भरत हीर भरत एप्लीक कार्य (कटवर्क) और मनकों (बीड्स) की कढ़ाई शामिल हैं। जयपुर (राजधानी और सबसे बड़ा शहर) और जोधपुर जैसे राजसी नगरों में दरबारी कढ़ाई की परंपरा रही है। विवाह के परिधान दीवार पर टांगने वाले सजावटी कपड़े रजाइयाँ पालने की चादरें तथा पशुओं के लिए बनायी जाने वाली सजावट ये सभी वस्त्र कढ़ाई एप्लीक कार्य मनकों की सजावट और शीशों सेक्विन्स बटनों व सीपियों से सुसज्जित किए जाते हैं।

दरबारी कढ़ाई में विशेष रूप से गोटा सलमा और धागे की कढ़ाई का प्रयोग होता है। राजस्थान की एक विशेषता यह भी है कि यहाँ की हस्तकला और कढ़ाई देशभर में अत्यधिक लोकप्रिय है जो राज्य की सांस्कृतिक विविधता और कलात्मक विरासत को दर्शाती है।राजस्थान की एक खास विशेषता,जो पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है वह है चमड़े के सामानों पर रेशमी कढ़ाई खासकर जूतों और पर्सों पर की जाने वाली कढ़ाई।

राजस्थान एक रंग-बिरंगा राज्य है जो अपनी कढ़ाई कला के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। सदियों पुरानी कौशल परंपरा और शाही विरासत ने राजस्थान की पारंपरिक कला और शिल्प को विश्व प्रसिद्ध आकर्षण बना दिया है। यहाँ के चमचमाते पारंपरिक वस्त्र और कपड़े न केवल देशी बल्कि विदेशी पर्यटकों और बाज़ारों को भी अपनी ओर आकर्षित करते हैं और ये सुंदर कढ़ाईदार कलाकृतियाँ बनाने वाली महिलाओं के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन चुकी हैं।

हालाँकि, राजस्थान की पारंपरिक कढ़ाई शैलियों के संरक्षण और पुनर्जीवन के लिए अब भी आत्मनिर्भरता और महिला सशक्तिकरण से संबंधित क्षेत्रों में अधिक कार्य किए जाने की आवश्यकता है।

राजस्थान का इतिहास

भारतीय राज्य राजस्थान का इतिहास लगभग 5000 वर्ष पुराना है। राजस्थान का इतिहास विभिन्न युगों के आधार पर तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है प्राचीन काल मध्यकाल और आधुनिक काल।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-37346

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 11, June 2026
Impact Factor: 8.2

प्राचीन काल (1200 ईस्वी तक)

लगभग 700 ईस्वी से राजपूत वंशों का उदय हुआ और उन्होंने राजस्थान के विभिन्न भागों पर अपना नियंत्रण स्थापित किया। उससे पहले राजस्थान कई गणराज्यों का हिस्सा था। यह मौर्य साम्राज्य का भाग था। आठवीं से बारहवीं शताब्दी के बीच का काल भारतीय इतिहास में राजपूत वंशों के उत्कर्ष का काल माना जाता है। 750 से 1000 ईस्वी तक प्रतिहारों ने राजस्थान और उत्तर भारत के बड़े हिस्से पर शासन किया। 1000 से 1200 ईस्वी के मध्य चालुक्य, परमार और चौहान वंशों के बीच वर्चस्व की संघर्ष की स्थिति बनी रही।

मध्यकाल (1201 - 1707 ईस्वी)

लगभग 1200 ईस्वी के आसपास राजस्थान का एक हिस्सा मुस्लिम शासकों के अधीन आया। उनके प्रमुख शक्ति केंद्र नागौर और अजमेर थे। रणथंभौर भी उनके अधीन रहा। 13वीं शताब्दी की शुरुआत में मेवाड़ राजस्थान की सबसे प्रमुख और शक्तिशाली रियासत बनकर उभरी।

आधुनिक काल (1707 – 1947 ईस्वी)

राजस्थान कभी भी राजनीतिक रूप से एकीकृत नहीं रहा जब तक कि मुगल सम्राट अकबर ने इस पर अपना प्रभुत्व स्थापित नहीं किया। अकबर ने राजस्थान को एक संगठित सूबा बनाया। 1707 के बाद मुगलों की शक्ति का पतन शुरू हुआ जिससे राजस्थान में राजनीतिक विघटन की स्थिति बनी। मुगल साम्राज्य के टूटने के बाद मराठों ने राजस्थान में प्रवेश किया और 1755 में उन्होंने अजमेर पर अधिकार कर लिया। 19वीं शताब्दी की शुरुआत पिंडारियों के आक्रमणों से चिह्नित हुई।

3. भारत में कढ़ाई कला

कढ़ाई आत्म-अभिव्यक्ति का एक माध्यम है, जिसे धैर्य समर्पण और मेहनत से सुई के द्वारा उकेरा जाता है। इस कला को सही अर्थों में "सुई से की गई चित्रकला" कहा जाता है। कढ़ाई किसी भी सामान्य उपयोग की

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 11, June 2026 Impact Factor: 8.2

वस्तु में भी गरिमा सौंदर्य जीवन और शैली का संचार कर देती है। लोककला के रूप में कढ़ाई विशेष रूप से महिलाओं के लिए सदैव उनकी आत्म-अभिव्यक्ति का जरिया रही है। यह उनके जीवन छिपी हुई इच्छाओं महत्वाकांक्षाओं और उस समाज की धार्मिक मान्यताओं का प्रतिबिंब है जिससे वे संबंधित होती हैं।

भारत वस्त्र निर्माण की लगभग 5000 वर्षों पुरानी समृद्ध परंपरा वाला देश है। भारतीय वस्त्र अपनी महीन बुनावट और विस्तृत डिज़ाइनों के लिए प्राचीन काल से प्रसिद्ध रहे हैं। रंगाई छपाई चित्रांकन और कढ़ाई की प्रक्रियाएँ भारत में सदैव अत्यंत उन्नत रही हैं। कुशल कारीगरों ने इन जीवंत हस्तशिल्प परंपराओं को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया है।

भारत में कढ़ाई न केवल एक सजावटी कला है बल्कि यह वस्त्र को सुदृढ़ और आकर्षक बनाने का एक साधन भी है। यह घरेलू परंपराओं का महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत के विभिन्न हिस्सों में कढ़ाई की पारंपरिक कला के प्रमुख केंद्र स्थापित हैं। विशेष रूप से भारत के पश्चिमी क्षेत्रों के कारीगर विभिन्न प्रकार के कढ़ाई टांकों में निपुण हैं और वे शॉल स्कार्फ मेज़पोश गद्दी और चादरों पर सुंदर डिज़ाइन उकेरते हैं।

भारत के प्रत्येक राज्य की अपनी विशिष्ट कढ़ाई शैली होती है जो वहां की सांस्कृतिक परंपराओं को दर्शाती है।

- **कश्मीर** में साटन स्टिच (रेशमी टांका) का प्रयोग किया जाता है।
- **पंजाब** की बाग और फुलकारी कढ़ाई डार्न स्टिच (रफू टांका) पर आधारित होती है जो प्रदेश की जीवंत संस्कृति की तरह रंग-बिरंगी होती है।
- **उत्तर प्रदेश** की चिकनकारी सफेद कपड़े पर सफेद धागे से की जाती है और अत्यंत कौशल की मांग करती है।
- **राजस्थान** में ग्रे रंग के कपड़े पर रेशमी धागों की रंगीन कढ़ाई एकरसता को तोड़ती है और उसे जीवंत बनाती है।

भारतीय कढ़ाई में असंख्य प्रकार के टांके प्रयुक्त होते हैं, जिनमें प्रमुख हैं रनिंग स्टिच बैक स्टिच स्टेम स्टिच फेदर स्टिच इंटरलेसिंग स्टिच साटन स्टिच क्रॉस स्टिच आदि।

भारतीय कढ़ाई विविध रंगों और बारीकियों से परिपूर्ण होती है, और प्रत्येक राज्य की अपनी विशिष्ट शैली होती है जो वहां की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाती है। हस्तनिर्मित कढ़ाई एक सुंदर कला है जिसे कोई भी सीख सकता है। यह एक ऐसी परंपरा है जिसे संरक्षित करना और सीखना अत्यंत आवश्यक है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 11, June 2026 Impact Factor: 8.2

रेगिस्तानी पारंपरिक कढ़ाई शैलियाँ

चार कोस पे पानी बदले आठ कोस पे वाणी"

यह कहावत भारतीय सांस्कृतिक विविधता का सुंदर प्रतीक है। इसका अर्थ है कि हर चार कोस (लगभग 9 किलोमीटर) पर पानी का स्वाद और हर आठ कोस (लगभग 18 किलोमीटर) पर भाषा बदल जाती है। यद्यपि कोस की दूरी आज निश्चित रूप से बताना कठिन है परंतु यह सच है कि भारत में हर कुछ किलोमीटर पर संस्कृति परंपराएं और शिल्प परंपराएं भी बदल जाती हैं। प्रत्येक राज्य की अपनी विशिष्ट कला शैलियाँ और गौरवशाली इतिहास है।

भारत का पश्चिमी क्षेत्र विशेषकर रेगिस्तानी भाग (राजस्थान व कच्छ क्षेत्र) अपनी रंगीन कढ़ाई परंपराओं के लिए विश्वप्रसिद्ध है। यहाँ की कढ़ाई न केवल सौंदर्य और सजावट का प्रतीक है बल्कि यह **व्यक्तित्व पहचान और सामाजिक स्थिति** को भी दर्शाती है। कढ़ाई की शैलियों में अंतर समुदाय उप-समुदाय और सामाजिक स्तर की पहचान करता है। प्रत्येक शैली विशिष्ट टांकों पैटर्न रंगों और उनके प्रयोग के नियमों का एक अनूठा मिश्रण है जो ऐतिहासिक सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होकर विकसित हुई है। पारंपरिक होते हुए भी ये शैलियाँ स्थिर नहीं रहीं समय के साथ इनमें परिवर्तन और नवाचार हुआ।

रेगिस्तानी क्षेत्रों में मुख्य पारंपरिक कढ़ाई शैलियाँ हैं:

- **सूफ़**
- **खारक**
- **पाक्को**
- **एप्लीक**
- **सिंधी कढ़ाई**

सूफ़ कढ़ाई

सूफ़ कढ़ाई एक अत्यंत सूक्ष्म धैर्यपूर्ण और जटिल कला है जो मुख्य रूप से त्रिकोणीय आकृतियों पर आधारित होती है, जिन्हें सूफ़ कहा जाता है। यह कढ़ाई वस्त्र के आड़ा और बाना के आधार पर की जाती है जिसमें सतह पर साटन स्टिच का उपयोग होता है किंतु यह कार्य वस्त्र की पिछली तरफ से किया जाता है जिससे आगे की

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 11, June 2026
Impact Factor: 8.2

सतह पर नयनाभिराम डिज़ाइन उभरते हैं। इस कला की विशेष बात यह है कि कढ़ाई के डिज़ाइन पहले से न तो बनाए जाते हैं और न ही कपड़े पर खींचे जाते हैं। प्रत्येक कारीगर अपने मन में कल्पना कर डिज़ाइन की योजना बनाती है और फिर उसे कपड़े पर उल्टे क्रम में गिनती के आधार पर उकेरती है। यह प्रक्रिया अत्यधिक कौशल, ज्यामिति की समझ, तेज दृष्टि और सटीक गिनती की मांग करती है। एक कुशल सूफ़ कारीगर अपने कार्य में निपुणता दिखाते हुए डिज़ाइनों को अत्यंत बारीकी से भरता है, जिनमें छोटे-छोटे त्रिकोण संतुलित ज्यामितीय आकृतियाँ और सूक्ष्म सजावटी टांके सम्मिलित होते हैं। सूफ़ कढ़ाई की डिज़ाइनें प्रायः प्रतीकात्मक और ज्यामितीय होती हैं और यह शैली रचनात्मक कल्पना तथा अनुशासन का अद्वितीय संगम प्रस्तुत करती है।

पाक्को कढ़ाई

पाक्को' का अर्थ होता है मजबूत या ठोस। यह कढ़ाई शैली अपनी घनी, टिकाऊ और दृढ़ टांकों के लिए प्रसिद्ध है। इसमें मुख्य रूप से स्क्वायर चेन स्टिच और डबल बटनहोल स्टिच का उपयोग किया जाता है। डिज़ाइन की रूपरेखा को और स्पष्ट व आकर्षक बनाने के लिए आकृतियों के किनारों को अक्सर काले तिरछे साटन स्टिच से उकेरा जाता है। पाक्को कढ़ाई के डिज़ाइन सामान्यतः फूल-पत्तियों (फ्लोरल मोटिफ्स) पर आधारित होते हैं, जिन्हें संतुलित और समरूप ढंग से सजाया जाता है। एक दिलचस्प प्रक्रिया यह है कि डिज़ाइन को पहले मिट्टी पर सुई से खरोंच कर उसका खाका तैयार किया जाता है और फिर उसी आधार पर कढ़ाई की जाती है। यह शैली न केवल अपनी मजबूती और टिकाऊपन के लिए जानी जाती है बल्कि इसके माध्यम से उस समुदाय की संस्कृति परंपराएं और सौंदर्यबोध भी प्रकट होते हैं। पाक्को कढ़ाई पीढ़ियों से हस्तांतरित होती चली आ रही है और आज भी अपनी पारंपरिक कारीगरी की मिसाल कायम किए हुए है।

खारक (खारीक) कढ़ाई

खारक कढ़ाई जिसे स्थानीय रूप में "खारीक" भी कहा जाता है, पश्चिमी भारत विशेषकर गुजरात और राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्रों की एक अत्यंत विशिष्ट और पारंपरिक कढ़ाई शैली है। यह शैली मुख्यतः ज्यामितीय डिज़ाइनों और गिनती आधारित तकनीक पर आधारित होती है, जिसे "काउंटेड वर्क" कहा जाता है। कढ़ाई की इस शैली में कारीगर कपड़े के ताने-बाने की गिनती करके डिज़ाइन का ढांचा बनाते हैं। खारक कढ़ाई की सबसे पहली विशेषता इसकी गहरी गणनात्मक समझ है जिसमें कारीगर पहले काले रंग की

DOI: 10.48175/IJARSCT-37346

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 11, June 2026
Impact Factor: 8.2

वर्गाकार सिलाई (ब्लैक स्क्वायर आउटलाइन) से डिज़ाइन की सीमाएँ तय करता है और फिर उन आकृतियों के भीतर की जगह को साटन स्टिच के माध्यम से भरा जाता है। यह स्टिच कपड़े के सामने की ओर से किया जाता है और पूरी तरह ताने और बाने की दिशा में होता है।

इस कढ़ाई की एक और अनूठी बात यह है कि यह कपड़े के प्रत्येक हिस्से को भर देती है इसे "पूर्ण आवरण कढ़ाई" कहा जाता है जहाँ कोई भी भाग खाली नहीं छोड़ा जाता। खारक कढ़ाई न केवल अपनी रंगों और पैटर्न की विविधता के लिए जानी जाती है बल्कि इसकी बारीकी संतुलन और अनुशासन के कारण इसे एक उच्च कोटि की कलात्मक अभिव्यक्ति माना जाता है। इस कढ़ाई में संलग्न महिला कारीगरों को न केवल रचनात्मकता, बल्कि सटीक गणितीय सोच, गहन एकाग्रता और दृष्टि कौशल की भी आवश्यकता होती है।

खारक कढ़ाई सामान्यतः पारंपरिक परिधानों जैसे कि घाघरा ओढ़नी चोली और कंधवास्त्र पर की जाती है। यह न केवल एक सजावटी कला है, बल्कि स्थानीय समुदायों की सांस्कृतिक पहचान सामाजिक प्रतिष्ठा और जातीय विविधता को भी दर्शाती है। इस प्रकार खारक कढ़ाई एक जीवंत परंपरा है जो कारीगरों की पीढ़ियों द्वारा संजोई गई है

पैचवर्क कढ़ाई

भारतीय हस्तशिल्प में अधिकांश समुदायों में पैचवर्क और एप्लीके कढ़ाई की मजबूत परंपराएँ मौजूद हैं। कई पारंपरिक कढ़ाई शैलियों में महारत हासिल करने के लिए तेज़ दृष्टि की आवश्यकता होती है क्योंकि इन शैलियों में सूक्ष्म और जटिल डिज़ाइन बनाए जाते हैं।

जब महिलाएं मध्यम आयु तक पहुँचती हैं, तो उनकी दृष्टि कमजोर होने लगती है जिससे बेहद नाजुक और बारीक कढ़ाई करना कठिन हो जाता है। इस वजह से वे अपनी कला को पैचवर्क की ओर मोड़ती हैं। पैचवर्क मूल रूप से एक ऐसी परंपरा थी जो पुराने या फटे हुए कपड़ों को पुनः उपयोग में लाने के लिए विकसित की गई थी। इस तकनीक में कपड़े के छोटे-छोटे टुकड़ों को जोड़कर एक नया और आकर्षक डिज़ाइन बनाया जाता है जिससे न केवल कपड़े की उपयोगिता बढ़ती है बल्कि सौंदर्य भी आता है

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 11, June 2026
Impact Factor: 8.2

सिंधी

सिंधी को इंटरलेसिंग कढ़ाई के नाम से भी जाना जाता है। सिंधी कढ़ाई में डिज़ाइन मुख्य रूप से शेवरॉन और चेक पैटर्न होते हैं, जो इस कढ़ाई को स्टाइलिश क्लासिक और पारंपरिक लुक देते हैं। कभी-कभी ये ज्यामितीय डिज़ाइन फूलों और पक्षियों के रूप में भी कला पूर्वक बनाए जाते हैं जो वस्त्रों में सुंदरता और जीवंतता जोड़ते हैं।

आरी वर्क

भारतीय कढ़ाई की पारंपरिक कला में 'आरी कढ़ाई का विशेष स्थान है जिसका इतिहास 12वीं शताब्दी तक जाता है और इसे मुग़ल दरबारों में विशेष संरक्षण मिला। आरी कढ़ाई अत्यंत सूक्ष्म होती है और इसमें एक शाश्वत, निखरी हुई सुंदरता दिखाई देती है। इस शैली में मुख्य उपकरण आरी होता है जो एक हुक्ड सुई होती है जिसे जूता बनाने वालों की हुक्ड सुई के समान माना जाता है। आरी की मदद से जटिल और विस्तृत डिज़ाइन बनाए जाते हैं।

मोची या आरी भरत कढ़ाई की एक तकनीक है जिसे व्यक्तिगत उपयोग और व्यावसायिक दोनों उद्देश्यों के लिए किया जाता था। यह जूता बनाने वालों (मोचियों) के तंत्र से प्रेरित है जो चमड़े के सामान पर कढ़ाई करते थे और बाद में इस तकनीक को कपड़े पर अपनाया गया।

कढ़ाई किसी भी वस्तु को सुई और धागों की मदद से सजाने की प्रक्रिया है। इसमें कपड़े पर रंगीन धागे या अन्य सामग्रियों से विभिन्न पैटर्न और डिज़ाइन बनाए जाते हैं। प्राचीन भारतीय सुईयाँ मोहनजोदड़ो में मिली हैं, जिनकी उम्र लगभग 2000 ईसा पूर्व की मानी जाती है। कढ़ाई और वस्त्र की परंपराओं में सामाजिक जातीय और सांस्कृतिक जटिलताएँ झलकती हैं। प्रत्येक अनोखे टांके डिज़ाइन रंग और पैटर्न लोगों के इतिहास, अनुभव और पहचान को दर्शाते हैं। ये कौशल पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होते आए हैं।

यह कौशल और डिज़ाइन सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते आए हैं। इसलिए घरेलू कढ़ाई की विशिष्ट शैलियाँ गाँव-गाँव की बजाय जाति-जाति के अनुसार भिन्न होती हैं।विवाह जैसे महत्वपूर्ण संस्कारों में भी कढ़ाई की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है एक कन्या अपने विवाह के लिए बचपन से ही कढ़ाई से वस्त्र और अन्य चीज़ें तैयार करती है। गांव की महिलाएं अपनी रोजमर्रा की और धार्मिक जरूरतों की वस्तुओं को

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 11, June 2026
Impact Factor: 8.2

रंगीन और जीवंत बनाने के लिए कढ़ाई में घंटों लगाती हैं। ये महिलाएं चरवाहा कृषि कार्य में लगी या हिंदू मुस्लिम या जैन समुदाय की हो सकती हैं पर सभी की यह कला उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा है।

इस प्रकार भारत में कढ़ाई केवल एक सजावट की कला नहीं बल्कि एक सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान भी है जो सदियों से जीवित और विकसित होती आई है।

निष्कर्ष

राजस्थान की सुई कढ़ाई न केवल एक सौंदर्यपरक हस्तकला है बल्कि यह उस समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का जीवंत प्रतिबिंब भी है जो पीढ़ी दर पीढ़ी महिलाओं द्वारा संजोई और संरक्षित की गई है। प्रत्येक टांका रंग और डिज़ाइन किसी न किसी जातीय धार्मिक या सामाजिक परंपरा से जुड़ा हुआ है जो क्षेत्रीय पहचान और जीवनशैली को दर्शाता है। राजस्थान की विभिन्न जातियों और समुदायों में विकसित हुई विशिष्ट कढ़ाई शैलियाँ जैसे कच्छ कढ़ाई गोटा पट्टी मुक्का मोथरा और पैचवर्क न केवल सौंदर्य का प्रतीक हैं बल्कि वे जीवन के विविध आयामों को भी अभिव्यक्त करती हैं।

यह कारीगरी केवल सजावटी उद्देश्य नहीं निभाती बल्कि सामाजिक और धार्मिक अनुष्ठानों विशेषकर विवाह में इसका गहरा सांस्कृतिक महत्व होता है। बचपन से युवावस्था तक लड़कियाँ अपने भविष्य के गृहस्थ जीवन के लिए यह कला सीखती हैं जिससे न केवल कौशल का विकास होता है बल्कि पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों की अभिव्यक्ति भी होती है।

इस प्रकार राजस्थान की सुई कढ़ाई न केवल एक कलात्मक अभिव्यक्ति है, बल्कि यह महिला सशक्तिकरण, सांस्कृतिक संरक्षण और आर्थिक आत्मनिर्भरता का भी माध्यम बनती जा रही है। यह परंपरा आज भी जीवंत है और मेक इन इंडिया जैसे अभियानों के माध्यम से वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बना रही है

ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 11, June 2026
Impact Factor: 8.2

संदर्भ सूची

- राव आर. वी. *भारतीय हस्तशिल्प*, बुक कवर्स प्रा. लि., हैदराबाद 1969
- भटनागर पी. *भारतीय वस्त्रों और परिधानों में सजावटी डिज़ाइन का इतिहास* अभिषेक पब्लिकेशन्स, चंडीगढ़ 2005
- भवानी ई. *भारत की सजावटी डिज़ाइन और शिल्पकला* डी. बी. तारापोरवाला बॉम्बे 1968
- नाईक एस. डी. *भारत की पारंपरिक कढ़ाई शैलियाँ* ए. पी. एच. पब्लिशिंग, नई दिल्ली 1996
- **दत्ता ए. पश्चिम बंगाल की प्रारंभिक ऐतिहासिक टेराकोटा कला का सांस्कृतिक महत्व: एक नृवंश-पुरातात्त्विक दृष्टिकोण।**
- **रोहिणी अरोड़ा आर. एम.** 2014 **चंबा कढ़ाई: पारंपरिक तकनीक की स्टिच विश्लेषण।** *रिसर्च जर्नल ऑफ फैमिली, कम्युनिटी एंड कंज़्यूमर साइंस*
- **राजिंदर कौर आई. जी.** 2014 **पंजाब की फुलकारी और बाघ लोककला: पारंपरिक से समकालीन समय तक डिज़ाइनों में परिवर्तन का अध्ययन।**